यमराज की दिशा

कविता का सार / प्रतिपाद्य

यह कविता तत्कालीन स्थिति पर व्यंग्य करती हुई दिखाई देती है। कवि के अनुसार आज हम विकास के नाम पर जो विध्वंस फैला रहे हैं, वह पूरी मानव जाति के लिए विनाशकारी हैं। उसके अनुसार पहले दक्षिण दिशा यमराज की दिशा कहलाती थी। आज समय बदल गया है अब चारों तरफ मृत्यु का राज है। यह आतंक कुछ मनुष्य द्वारा फैलाया गया है। अतः कवि हमें सतर्क रहकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। वह चाहता है कि हम इसका विरोध करें और मानव जाति विरोधी ताकतों को बढ़ने से रोकें।

कविता का भाव

➳ भाव यह है कि कुछ लोगों ने मानवता को भूलाकर अपने स्वार्थों के लिए मानव जाति का विध्वंस आरंभ कर दिया है। अब ये अपने स्वार्थों के लिए यमराज का काम कर रहे हैं।

भाषा शैली की विशेषताएँ

➳ प्रवाहमयी भाषा
➳ गेयता के गुण से पूर्ण
➳ सरल तथा सीधी भाषा
➳ अलंकार का सुंदर प्रयोग
➳ संवादशैली के गुण से युक्त
➳ कथात्मक शैली के गुण से युक्त

कविता का उद्देश्य

➳ यह पाठ हमें विकास के नाम पर हो रही भयानक स्थिति को दर्शाने का प्रयास करता है। जिसके कारण मनुष्य जीवन में परेशानियाँ तथा चिंताएँ बढ़ गई हैं। अब उनका जीवन सुरक्षित नहीं रह गया है।

कविता से मिलने वाली शिक्षाएँ / संदेश / प्रेरणा

➳ यह पाठ हमें समाज में फैल रही हिंसा तथा विध्वंस का सामना करने की शिक्षा देता है।